3195 (07)

शमशेर बहादुर सिंह एवं रघुवीर सहाय के साहित्य में समकालीन बोध

चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से
पीएच0डी0 (हिन्दी)
उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का सार

शोध निर्देशिका :
डॉ0 सरिता वर्मा
विभागाध्यक्षा, हिन्दी विभाग,
मेरठ कॉलिज, मेरठ

शोधार्थिनी :
प्रगति

शोध केन्द्र
हिन्दी विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ
2019

शमशेर बहादुर सिंह एवं रघुवीर सहाय के साहित्य में समकालीन बोध

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में 'शमशेर बहादुर सिंह एवं रघुवीर सहाय के साहित्य में समकालीन बोध' को कई आयामों के अन्तर्गत विश्लेषित किया गया है। समकालीन बोध स्वयं में बहुत ही वृहद् एवं गूढ़ अवधारणा है। इसके अन्तर्गत तद्युगीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को विश्लेषित किया जाता है, साथ ही इसके केन्द्र में तद्युगीन आन्दोलन समस्याएँ एवं सभी बड़े विमर्श समाहित रहते हैं। शमशेर और रघुवीर सहाय के साहित्य में समकालीन बोध को इन्हीं मानकों पर मूल्यांकित किया गया है। शमशेर और रघुवीर सहाय दोनों ही रचनाकार विगत 60 वर्षों के कालखण्ड के ईमानदार और प्रामाणिक विश्लेषक हैं। उन्होंने विगत छः दशक की हिन्दुस्तान की बनती बिगड़ती तस्वीर को बहुत ही तटस्थ और निरपेक्ष रहकर अपने साहित्य में रूपायित किया है। दोनों ही साहित्यकारों के साहित्य में वैचारिक प्रतिबद्धता का प्रश्न बहुत ही स्पष्ट तरीके से उभरकर आता है। उनके साहित्य में हाशिए के व्यक्ति के प्रति गहन प्रतिबद्धता, ग्रामीण संस्कृति के प्रति आस्था और प्रेम स्वतन्त्रता एवं साम्य की स्थापना का उद्घोष स्पष्ट सुनायी देता है। समकालीनता केवल यथार्थ का चित्रण भर नहीं करती अपितु जो कुछ क्षतिग्रस्त है, उसकी पुनर्रचना करना भी इसका महत्वपूर्ण पक्ष है। समकालीनता मानवीय पक्षधरता का दूसरा नाम है। शमशेर एवं रघुवीर सहाय के साहित्य में यथार्थ के चित्रण के साथ–साथ क्षतिग्रस्त मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना पर बल दिया गया है। उनका साहित्य श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों का संरक्षक एवं पोषक है। इनके साहित्य में सामाजिक सम्बन्धों की भी स्पष्ट व्याख्या देखने को मिलती है। दोनों रचनाकारों के यहाँ स्त्री की विभिन्न छवियाँ बहुत ही संवेदनशीलता एवं प्रतिबद्धता के साथ चित्रित हुई हैं। इनके साहित्य में आर्थिक स्थितियों की भी बहुत सूक्ष्म एवं गहन व्याख्या की गई है। दोनों रचनाकारों ने अपने जीवन में एकाकीपन एवं विषम परिस्थितियों को साहित्यिक रूप में कैसे रूपान्तरित किया। यह तथ्य भी शोध प्रबन्ध के माध्यम से प्रकाश में आया है। शमशेर भारत की गंगा जमुना तहजीब के प्रबल समर्थक थे। वे हिन्दू–मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी को समरसता, बन्धुत्व एवं मैत्री का सन्देश देते हैं। आलोच्य रचनाकारों के साहित्य में युद्ध, हिंसा एवं अन्तर्राष्ट्रीय तनाव से मुक्ति का स्वर स्पष्ट सुना जा सकता है। उदारीकृत अर्थतंत्र के युग में दोनों रचनाकारों के रचनाकर्म में पुनर्पाठ की सम्भावना को भी विश्लेषित किया गया है। शमशेर और रघुवीर सहाय का

साहित्य अपने नूतन विचार, समय, समाज, प्रकृति एवं भाषा के संदर्भ में नवाचार लिए हुए है। शोध प्रबन्ध में इस नई विचार दृष्टि को विश्लेषित किया गया है। शमशेर एक उत्कृष्ट साहित्यकार होने के साथ–साथ एक उत्कृष्ट चित्रकार भी थे। अतः उनके साहित्य में साहित्य और चित्रकला के मध्य एक सेतु का निर्माण किया है। शोध प्रबन्ध में इस तथ्य को भी विश्लेषित किया गया है। शमशेर और रघुवीर सहाय को संगीत की भी गहरी जानकारी थी। दोनों कविता में संगीत के ज्ञान को महत्वपूर्ण मानते थे। शोध प्रबन्ध में उनके संगीत विषयक ज्ञान का भी विश्लेषण किया गया है।

समकालीनता का प्रश्न केवल कथ्य से जुड़ा हुआ नहीं है, अपितु शिल्प से जुड़ा हुआ भी है। नई बात या नया विचार पुराने शिल्प में कहना सम्भव नहीं और न ही वह समकालीन होता है। रचनाकार को शिल्प के स्तर पर भी समकालीन बनना होता है। शमशेर एवं रघुवीर सहाय के साहित्य में इसे स्पष्ट देखा जा सकता है। उनकी भाषा, बिम्ब, प्रतीक एवं शिल्प विधान में भी समकालीनता को खोजा गया है। आलोच्य रचनाकारों ने पद्य के साथ–साथ गद्य में भी विपुल मात्रा में लेखन किया। अतः शोध प्रबन्ध में गद्य साहित्य को भी विश्लेषण के केन्द्र में रखा गया है।

शमशेर ने कविता के अतिरिक्त ग़ज़ल, गीत, रूबाइयाँ और कुछ सॉनेट लिखे। शोध प्रबन्ध में इन काव्य रूपों में भी समकालीनता को विश्लेषित किया गया है। आलोच्य रचनाकारों के साहित्य में भाषा के माध्यम से साँझी संस्कृति के निर्माण की अनूठी और अभिनव पहल देखने को मिलती है। शमशेर का साहित्य हिन्दी और उर्दू के दोआब से निर्मित है। वही रघुवीर सहाय के साहित्य की भाषा में तमाम क्षेत्रीय बोलियों के सहयोग से एक ऐसी हिन्दुस्तानी की कल्पना की गई है, जो समग्र रूप में समूचे हिन्दुस्तान का प्रतिनिधित्व कर सके। शोध प्रबन्ध में समकालीन बोध के सभी पैमानों पर शमशेर एवं रघुवीर सहाय का साहित्य प्रामाणिक एवं सशक्त उपस्थिति दर्ज कराता है।

शोध निर्देशिका :

डॉ0 सरिता वर्मा
विभागाध्यक्षा, हिन्दी विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ

शोधार्थिनी :

प्रगति